ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

Page No. : 302-308

स्वामी प्रभुपाद के गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का विश्लेशणात्मक अध्ययन।

रानी खुशबू कुमारी
शोध छात्रा
शिक्षा शास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेल : ranikhushbukumari123@gmail.com
प्रो. (डॉ.) गीता रानी
प्रोफेसर–सह–शोध निर्देशक
शिक्षा शास्त्र विभाग
BNSV पीजी कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सारांश

प्राचीन काल से भारतीय अपनी संस्कृति, धर्म, दर्शन, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विश्व भर में अतुलनिय रही हैं। परन्तु मध्यकाल की अराजकता न सह सकी और यह धीरे–धीरे कुम्हलाने लगी। परन्तु इसकी कुछ अंश यत्र–तत्र फैल गये जो वृदांवन, काशी, मथुरा, ऋशिकेश, मायापुर जैसे योग नगरियों में संस्कृत पाठशाला एवं गुरूकुलों के रूप में अंकुरित हुई। जिसमें प्राचीन वैदिक शास्त्रों का अध्ययन– अध्यापन कार्य सम्पन्न करवाया जाता रहा है। यह सभी संस्थाएं भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षा का केन्द्र रही हैं। एक प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए दोनों प्रकार की शिक्षाओं का अहम भूमिका होती हैं। आज के आधुनिक समाज में भौतिक शिक्षा पर काफी अधिक बल दिया जाने लगा है, और आध्यात्मिक शिक्षा पर कम परन्तु हमारी गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत दोनों प्रकार की शिक्षा सम्पूर्ण रूप से प्रदान की जाती रही है जिसके उदाहरण चाणक्य, पाणिनी, कौटिल्य रहे हैं।

मुख्य शब्द –
कृश्णकृपामुर्ति अभय चरणाविंद स्वामी प्रभुपाद, गुरूकुल शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, भौतिक शिक्षा।

शिक्षा आर्जवम्

शिक्षा का एक अर्थ सरलता है और आर्जवम् का अर्थ है सरलता बिना किसी कूटनीति के व्यक्तिगत जीवन में मनुश्य इतना सरल और विनम्र हो कि अपने शत्रु तक वास्तविक सत्य को उद्घटिक कर सकने मे सक्षम बन सके।

स्वामी प्रभुपाद का पूरा नाम कृश्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् अभय चरणाविंद भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद है इनका जन्म 1 सितम्बर 1896 को कलकत्ता के उपनगर टालीगंज में हुआ था। इनका परिचय सिमित शब्दों में यह है कि इन्होंने अन्तराश्ट्रीय कृश्णभावनामृत संघ की सस्थापना किए जिन्होंने अपने हजारों अनुयायियों के जीवन में आध्यात्मिक आयाम लाया। ये एक ऐसे दुर्लभ व्यक्ति हुए जो इस धरती पर अवतरित होकर अपना जीवन पूरे विश्व में आध्यात्मिक चेतना के प्रसार के लिए समर्पित कर दिए। यह आध्यात्मिक चेतना आज केवल भारत ही नहीं पूरा विश्व में फैल चुकी हैं। प्रभुपाद जी ने गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना किए। प्राचीन समय में इसे मठ कहा जाता था परन्तु आज इसे गुरूकुल के नाम से जाना जाता है। जैसे– गौरांग वैदिक सोसाइटी हल्दिया (GYS), भक्तिवेदांत गुरूकुल एण्ड इंटरनेशनल स्कूल वृंदावन (BGIS)। इन शिक्षा के केन्द्रों मे समान पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, केवल एक स्थानिय भाषा पढ़ाई जाती है जिस स्थान पर यह गुरूकुल स्थित है। इनकी शिक्षा का आधार हमारे वैदिक ग्रंथों पर आधारित होती है, जैसे अथर्ववेद की शिक्षा, आर्युवेद विज्ञान के लिए, संगीत के लिए सामवेद, भवगद्गीता की शिक्षा प्रदान की जाती हैं। इस गुरूकुल में रहने वाले प्रत्येक छात्र, अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को चार नियम का पालन करना अनिवार्य है। जो निम्नलिखित है।

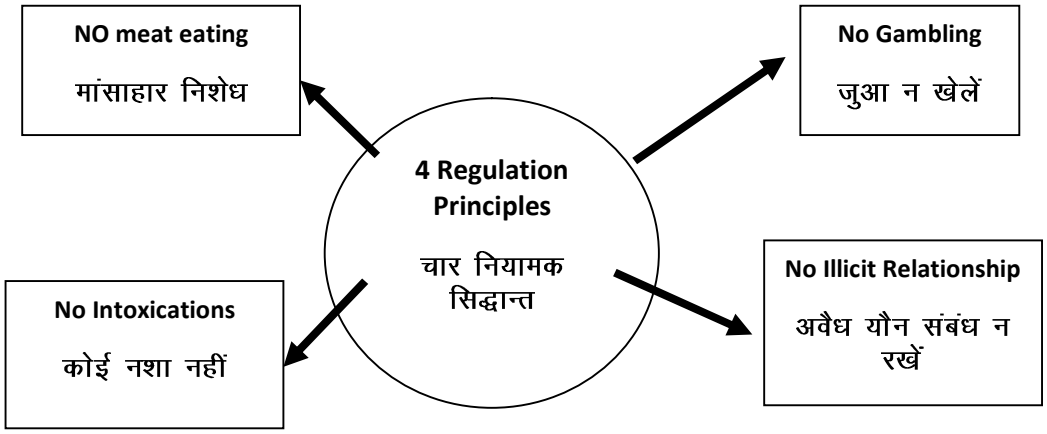

ये पापमयी जीवन के चार स्तम्भ है और व्यक्ति के शुद्ध जीवन जीने के लिये ये पापमयी जीवन के इन स्तम्भों को तोड़ना होगा। तभी जीवन के उद्देश्य को हासिल कर पाना सम्भव है।

इन नियमों का पालन करने से व्यक्ति का अस्तित्व प्रवित्र होगा। यह चार नियम का उल्लेख श्रीमद् भागवत के स्लोक 1.17.38 में दिया है। जब कलयुग पुछती है महाराज परिक्षित से हे प्रभु सभी जगह तो आप का वास है तो मेरा निवास स्थान सुनिश्चित किजिए मैं कहां रहूँ। तभी महाराज परीक्षित ने कली के निवास के लिए यह चार स्थान की अनुमति दिए।

अभ्यर्थितस्तदा तस्मै स्थानानि कलये ददौ।

धतुं पानं स्त्रीः सूना यत्राधर्मश्चतुर्विधः।।

SB. 1.17.38 सुत उवाच

अनुवाद– सूत गोस्वामी ने कहा महाराजा परीक्षित ने कलि द्वारा निवेदन किये जाने पर उन्हें उन स्थानों में रहने की अनुमति दी जहाँ जुआ, शराब पीना, वेश्यावृत्ति और पशु वध किया जाता था।

तात्पर्य – महाराजा परिक्षित के पदचिन्हों पर चलते हुए सभी राश्ट्रध्यक्षों का यह कर्तव्य है कि वे राज्य में धर्म के सिद्धान्तों, अर्थात् तपस्या, स्वच्छता दया और सत्यनिश्ठा को स्थापित करें। और अधर्म के सिद्धान्तों अर्थात अहंकार, अवैध स्त्री संग या वेश्यावृति नशा और झूठ को हर हाल में रोके।

प्रस्तावना

बालक के जन्म के पश्चात् प्रथम पाठशाला परिवार होता है लेकिन द्वितीय पाठशाला के लिए विद्यालय एवं गुरूकुलों का निर्माण किया गया है। जीवन को व्यतीत करने की योजना का कार्य सुन्दर एवं सुसंगठित रूप से किया जा सके अति आवाश्यक है। सम्पूर्ण रूप से विद्वान विशेशज्ञों के अधीन में रहकर छात्र के लिए अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ती कर पाना सम्भव है।

छात्र जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय का महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रभुपाद जी द्वारा निर्मित गुरूकुल प्रणाली में छात्र के शारिरीक, मानसिक विकास के साथ–साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाता है क्योंकि अस्वस्थय छात्र शिक्षा को पूरी तरह समर्पित भाव से ग्रहण नहीं कर पाने के कारण शैक्षणिक प्रगति में अलग–अलग तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। प्रभुपाद जी ने शिक्षा के सर्वांगीण विकास हेतु भौतिक शिक्षा के साथ–साथ आध्यात्मिक शिक्षा को भी बराबर भागीदार होने का विचार प्रस्तुत किए हैं। जहाँ हम यह समझ पाते हैं कि भौतिक शिक्षा के द्वारा जीवन की आवश्यकता को पूरा करने वाली शिक्षा ग्रहण किया जाता है वही आध्यत्मिक शिक्षा के अन्तर्गत आत्मा की आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, क्योंकि हमारा शरीर पंचमहाभूत से मिलकर बना है, (छीती, जल, पावन, गगन शमीर)

परन्तु आत्मा भगवान का अंश है। आत्मा का बोध हमें आध्यात्मिक शिक्षा क अंतर्गत दिया जाता है, इस शिक्षा का प्रदान करने के लिए गुरूकुल में श्रीमद् भागवतम्, श्रीमद् भागवद्गीता, वेद, पुराण, उपनिशद, संहिता आदि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने पर बल दिया जाता है। जैसे श्रीमद् भागवतम 1.17.38 में परीक्षित महाराज ने कलयुग के निवास स्थान चार बताए थे।

प्रथम –जहाँ जुआ होगा वहाँ कली का वास होगा, इसरा जहाँ मद्यपान होगा, तीसरा जहाँ वेश्यावृत्ति होगी और चौथा जहाँ पशुवध होगा। इसका तात्पर्य यह है कि अहंकार मद्यपान, असत्य, वेश्यावृत्ति जैसे अधर्मिकता के मूल सिद्धांत धर्म के चार मुख्य सिद्धांतों का विरोध करती है अर्थात तप, दया, शौच और सत्य का विरोध करती है।

श्रील प्रभुपाद

हम दो बातों से उम्र भर परेशान रहते हैं – जीवन में कुछ प्राप्त नहीं हुआ और अफसोस करना। किसी विशय वस्तु को लेकर अफसोस ही करते रहना, जो हमारे पास नहीं है, और किसी चीज के बाद विलाप करना, जिसे हमने खो दिया है। लेकिन इसलिए जैसे ही आप आध्यात्मिकता में आते हैं, तो यह दोनों बातें हमारे जीवन से खत्म हो जाती है। यही विज्ञान है।

Room conversation –सितम्बर 23, 1971, Nairobi

व्यक्ति को मन के स्तर पर सुख–दुःख का अनुभव होता है और हृदय के स्तर पर मान–अपमान, शरीर के स्तर पर शीत–उश्ण का अनुभव होता है। ये सारी भौतिक चेतना है, जो भौतिक शिक्षा से महसूस करते हैं लकिन हमारा आत्मा इन सभी कलमश से ऊपर है जिसे आध्यात्मिक शिक्षा से आनंद मिलती है। अगर सोचा जाए मनुश्य ने बीती सदियों से कितनी प्रगति की है, तो अधिकांश लोग प्रौद्योगिकी और विज्ञान बहुत अच्छे हैं और उसकी अपनी जगह एवं उपयोगिता है, लेकिन हमें हमारी सबसे महत्वपूर्ण खोज से विचलित नहीं होना चाहिए, जो है इस दुनिया के पार जाना और अपनी आध्यात्मिक प्रकृति को जगाना।

1972 ई0 में श्रील प्रभुपाद ने संयुक्त राज्य अमेरिका के डल्लास के टेक्सास राज्य में गुरुकुल विद्यालय की स्थापना किए यह गुरुकुल टेक्सास राज्य के उत्तर–मध्य भाग में ट्रिनिटी नदी के किनारे बसा है। इस गुरुकुल में प्राथमिक और आध्यात्मिक शिक्षा का सूत्रपात प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली से किया गया है। तब से प्रभुपाद के निर्देशन के अनुसार उनके शिष्यों ने सम्पूर्ण विश्व में दस से अधिक गुरुकुल खोले हैं।

गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिकता की दौड़ में शामिल प्रत्येक व्यक्ति अपने मूल्यों एवं नैतिकता को भूलता जा रहा है, उपभोग एवं विलासिता की इच्छा कहीं न कहीं हमारी मानवता एवं नैतिक मूल्यों को खो दे रही है। वैज्ञानिक और तकनिकी विकास ने शिक्षा का मूल भाव को सूचना तक ही सिमट कर रख दिया। लोग जानते हैं लेकिन अमल नहीं कर पाते हैं, इच्छा होती है, शरीर साथ नहीं देता है। जैसे भीख मांगो, चोरी करो, उधार लो, रिश्वत दो या धोखा दो, कैसे भी करके धन कमाओ और खुशी मनाओ। इसका मतलब है कम से कम जीवित रहो। किसी भी हालत में आगे बढ़ने और तरक्की करने की इस अन्दाधुन्द दौड़ में क्या हम यह सोचने के लिए ठहरते हैं कि इन कार्यों का परिणाम क्या होगा? यदि शास्त्रों एवं वेदों में वर्णित नरकथातनाएं सच होगी तो हमारा क्या होगा? हम अपनी स्वतन्त्रता का दुरूपयोग क्यों करते हैं? क्योंकि हम अपनी वास्तविक स्थिति से अनजान हैं। इन्हीं समस्याओं का समाधान हेतु अब जहां हमें महसूस होने लगा है कि गुरूकुल शिक्षा प्रणाली ज्यादा बेहतर है आधुनिक शिक्षा की तुलना में। क्योंकि गुरूकुल में आधुनिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शिक्षा पर बल दिया जाता है। इसका उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसे शिक्षण वातावरण का निर्माण करना है जहाँ प्रत्येक छात्र का चुतुर्मुखी विकास हो सके। बच्चों में जिज्ञासा, रचनात्मकता, सहानुभूति और नेतृत्व क्षमता का निर्माण किया जाता है ताकि वे एक सजग और सफल व्यक्तित्व बन सकें।

उद्देश्य

1. स्वामी प्रभुपाद के गुरूकुल की दिनचर्या का अध्ययन करना
2. स्वामी प्रभुपाद द्वारा रचित गुरूकुल के शैक्षिक तत्वों की व्याख्या करना।

गुरूकुल के छात्रों की दिनचर्या

गुरूकुल में छात्रों की दिनचर्या काफी सरल होती हैं। रोज सुबह बह्ममुहूर्त में 4 चार बजे उठकर नित्यक्रिया से निहत होकर 4:30 चार बजकर तीस मिनट में सभी छात्र एकत्रित होकर कृष्ण बलराम मंदिर मंगल आरती के लिए उपस्थित होते हैं। उसके बाद छः बजे से जप करते हैं, नौ बजे प्रसाद ग्रहण करना और उसके बाद पाठशाला के लिये प्रस्थान करना। गुरूकुल के छात्रों को पीली धोती कुरता और उतरी पहनावा होता है। दोपहर के समय संतुलित एवं पौष्टिक प्रसाद दिया जाता है। शारीरिक व्यायाम के लिए खेल–कूद करवाई जाती है। संध्या कालिन सत्र में संगीत की शिक्षाएं प्रदान की जाती है सामवेद का अध्ययन किया जाता है। शाम में सभी छात्र

संध्या आरती करते हैं, प्रसाद ग्रहण कर माता–पिता से बातें करते हैं और आठ बजे तक सो जाते हैं। प्रभुपाद जी की प्रसिद्ध पुस्तक प्रभुपाद लीलामृत के प्रथम भाग में स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है छात्र जीवन में आठ घंटे की नींद पर्याप्त है। सर्वांगिन विकास के लिये। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य छात्रों को नैतिक, व्यवहारिक और आध्यात्मिक रुप से पूर्ण विकसित करना है, जिससे छात्र जीवन के प्रत्येक पहलू को आत्मनिर्भर होकर निभा सके। गुरुकुल शिक्षा के अंतर्गत इन्द्रिय संयम एवं चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है, व्यवहारिक रुप से छात्र कुशल होते हैं, समाज में किसी भी अवस्था में पारिवारिक वातावरण को स्वस्थ्य बनाने में सक्षम साबित करना पसंद करते हैं जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके। गुरुकुल के पाठ्यक्रम में किताबी ज्ञान के साथ–साथ जीवन यापन कौशल सिखाये जाते हैं। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों से समाधान में अहम भूमिका निभाती है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति ऐतिहासिक एवं दार्शनिक हैं। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत से आकड़ों को एकत्र किया जाएगा। विशय वस्तु की विश्लेशण विधि द्वारा निश्कर्श प्राप्त किया जाएगा।

आकड़ों का स्त्रोत

प्राथमिक, द्वितीयक

आंकड़ो का संकलन

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति ऐतिहासिक एवं दार्शनिक हैं अतः शोध अध्ययन हेतु गुणात्मक आकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिसमें विभिन्न पुस्तक एवं व्यक्तिगत डायरी को अध्ययन के स्त्रोत के रूप में शामिल किया गया है।

निष्कर्ष

इस शोध का यह निष्कर्ष है कि बालक को जीवन में संतुलन बनाये रखने के लिए प्रारंभ से ही दोनों प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिये। गुरूकुल में गुरू अपना दर्शन नहीं गढ़ा करते है न अपना स्वभाव अक्रामक रखते हैं, सादा जीवन उच्च विचार होता है यद्यपि शिक्षा देने का ढंग ऐसा

रहता है कि उसकी तुलना में अन्य सभी दर्शन खोखले लगने लगते हैं। गुरूजी हमारे पारम्परिक वैदिक साहित्य और ऋषियों के शाश्वृत आदेशों का स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। इन ग्रंथो की शिक्षा सर्वप्रथम संस्कृत में दिया जाता था धीरे–धीरे विभिन्न भाशाओं में जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली आदि में दी जाती है। श्रीमद् भागवतम् में भगवान पुश्टि किए हैं, ' धर्मः प्रोज्झतकैतवोत्र परमो निर्मात्सराणां सताम'' अन्य सभी धर्म अपवित्र है केवल भागवत धर्म ही रहना चाहिए जिसका अर्थ है भगवान को केन्द्र में रखकर अपने कर्तव्य का पालन करना। जब व्यक्ति भगवान को केन्द्र में रखकर कर्म करता है, इसके उपरांत वह अभय और अशोक का अनुभव करता है। यहाँ अभय का अर्थ है जहाँ भय न हो अर्थात निर्भय। अशोक का अर्थ है जहाँ शोक न हो। शोक रहित मनुश्य प्रसन्न जीवन रहता है और उत्साह पूर्वक जीवन के सभी पलों का आस्वादन करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- दास वैशाखी[1] (2 जून 2022) प्रेमा भक्ति पर बंगाल वैश्णव दृश्टिकोण का एक अध्ययन डॉक्टोरल थेसिस कोलकाता विश्वविद्यालय।
- सिंह बाबु[2] (सितम्बर 1986) श्रीमद्भागवत पुराण में निरुपित धर्म का एक समीक्षात्मक अध्ययन, डॉक्टोरल थेसिस बनारस विश्वविद्यालय।
- अरोरा इतिका[3] (11 अगस्त 2023) पातंजल योगसूत्र एवं भगवद्गीता में योग की अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय।
- स्वामी प्रभुपाद श्री श्रीमद् ए0 सी0 भक्तिवेदान्त[4] (14 प्रकाशन सितम्बर 2024) अध्याता और इक्किसवीं सदी।
- स्वामी प्रभुपाद श्री श्रीमद् ए0 सी0 भक्तिवेदान्त[5] (22 प्रकाशन मई 2025) प्रकृति के नियम।